सादर प्रकाशनार्थ,

व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र में महिला विकास कार्यशाला

कुसमुण्डाः 19.03.2017– दक्षिण पूर्वी कोयला प्रक्षेत्र के व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र कुसमुण्डा में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सानिघ्य में सात दिवसीय महिला विकास प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में भ्राता सुरेन्द्र बाबू महाप्रबंधक संचालन द.पू.को.प्रक्षेत्र कुसमुण्डा ने कहा कि मेरी भी दो बेटियां हैं। जब मेरे घर बेटी का जन्म हुआ तो लोगों ने खुशियां जाहिर नहीं की लेकिन मेरे मन में उनके प्रति सम्पूर्ण सम्मान की भावना थी और मैंने हर प्रकार से उनकी पालना कर उनको सशक्त बनाया। भ्राता पी.सी.पाण्डेय मुख्य प्रबंधक द.पू.को.प्र कुसमुण्डा ने कहा कि ऐसा कहा जाता है कि जहॉ नारियों का सम्मान होता है वहॉ देवताओं का वास होता है। वेद वाणी में भी लिखा है कि यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते, रमन्ते तत्र देवता। भ्राता यू.के. गुप्ता वरिष्ठ प्रबंधक, पभारी व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र कुसमुण्डा ने कहा कि महिलाओं के विकास तथा उनके मनोबल को बढ़ाने के लिये इस तरह के कार्यकम बीच बीच में प्रशिक्षण केन्द्र द्वारा आयोजित किये जाते हैं। जिससे महिलायें अपने अधिकारों के प्रति सजग हो सकें। ब्रह्माकुमारी बिन्दु बहन ने कहा कि जीवन में सरल स्वभाव वाला निर्माण और निर्मान स्वभाव वाला होगा। उसका दिल दिमाग और बोल एक समान होगें। इसका आधार ही है अपने आप में आध्यात्मिकता लाकर स्वयं का दृष्टिकोण सकारात्मक बनाना है। अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति तो सिर्फ और सिर्फ एक परमात्मा के प्यार से ही हो सकती है। इससे आनंद की अनुभूति होती है एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास होता है। बह्माकुमारी पुष्पलता बहन ने कहा कि महिलाओं में सहनशीलता तथा पालना का गुण अधिक होता है। महिलाओं में सम्मान का भी दृष्टिकोण होता है इसीलिये स्वागत द्वार पर उन्हें आगे रखा जाता है। वे इस गुण में कई गुणा पुरूषों से आगे हैं। कु. प्रतिक्षा कुलमित्र ने आत्म चिन्तन पर प्रकाश डाला। ब्रह्माकुमारी लीना बहन ने कहा कि विज्ञान प्रगति के साथ जितनी हमने इमारतें उंची उंची बना ली हैं, लेकिन दिल उतने ही छोटे–छोटे हो गये हैं। हाई–वे पर रास्ते तो चौड़े कर लिये हैं और गति भी बढ़ा ली है, किन्तु आज हमारे देखने का नजरिया छोटा हो गया है। अपने ख्यालातां को बहुत उचां बनाना है। छोटी–छोटी बातों में हमारी मन की शक्ति बहुत खर्च होती है और एकाग्रता भी क्षीण होती है। हमारा रहन–सहन रायल हो लेकिन खर्चीला नहीं होना चाहिए। मन को मधुर बनाओ और अपना श्रृंगार गुणों से करो। इच्छायें और आकाक्षायें मन को

चंचल तथा गलत रास्ते पर चलने के लिये प्रेरित करती हैं। हम ज्यादा खर्च करते हैं लेकिन जीवन में आनंद कहां? हमारे पास मकान तो बड़े–बड़े हैं लेकिन घर व परिवार का वातावरण नहीं है। दवाईयों के भण्डार और चिकित्सकों की कमी नहीं है लेकिन शरीर स्वस्थ नहीं है। हरेक के पास ज्ञान व सूचनाओं का अम्बार लगा हुआ है लेकिन समय पर निर्णय लेने की क्षमता कम है। हमारे पास साधन और संसाधन बहुत हैं लेकिन हमारा स्वयं का जीवन मूल्य कम हो गया है। हम बातें ज्यादा करते हैं लेकिन प्यार थोड़ा और नफरत ज्यादा। भ्राता आई.डी. वैरागो अधीनस्थ अभियंता ने कहा कि ब्रह्माकुमारी बहनों का आपको अच्छा सानिध्य मिला है इसका आप लोग सम्पूर्ण लाभ लीजिये। अपना फीड बेक भी दीजिये जिससे इस कार्यक्रम को अधिक बेहतर बना सकें। मानवता की सेवा में, ब्रह्माकुमारी रूकमणी